بسم الله الرحمن الرحيم

जुम्मा खुतुबाह

HADHRAT MUHYI-UD-DIN AL-KHALIFATULLAH
Munir Ahmad Azim

27 October 2017

(06 Safar 1439 AH)

अपने सभी चेलों , सभी नए चेलों सहित (और दुनिया भर के सभी मुसलामानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद , हज़रत खलीफतुल्लाह अ त ब अ तशहुद , तौज , सुरा अल फ़ातिहा पढ़ा और फ़िर आपने उपदेश दिया "बिलकुल सही किताब" (भाग - १)

“ज़ालिकल किताबु ला रैब फ़ी, हुदल लिल मुत्तकीन, अल्लज़ीना यु मिनुना बिलग़ैबी व यु कीमूनस सलात व मिम्मा रज़कणाहुम युनफ़िक़ून ; वल्लज़ीना यु मिनुना बि -मा उन्ज़िला इलै क व -मा उन्ज़िला मिन - कबलिक व बिल आ खिरती हुम युकीनूं”

यह पुस्तक है ; इसमे कोई शक नहीं है यह एक मार्गदर्शन है , जो अल्लाह से डर कर चलते है | जो अनदेखी में विश्वास करते है और अपने प्राथना कायम रखते है और उसमे से करो जो हमने तुम्हे दिया | और जो इसमे विश्वास रखते है जो आप पर प्रकट हो रहा है और जो भी आप से पहले प्रकट हो चुका है और वे सुनिश्चित है जो अभी वर्त्तमान काल में आने को है |

आज के उपदेश के लिए मैं विशेष रूप से इबाबत के विषय पर बात करने के लिए सुना है (पूजा / पूजा करने के तरीके अल्लाह के लिए) यही कारण है की मैं सूरा अल बकरा के इन छंद को पढ़ रहा हूँ |क़ुरान शुरू करके , जो पहली बात अल्लाह (सु व त) ने कहा है : "यह पुस्तक है , इसमे कोई शक नहीं है " यहाँ ध्यान दिए जाने वाली बात यह है की अल्लाह (सु व त) ने किताब , उसकी किताब , ऐसी किताब जो बिलकुल सही है , का ज़िक्र किया है ,जिसमे गलती का कोई निशान नहीं है | इसमे बहुत सारे अर्थ शामिल है | यह ऐसी पुस्तक है जप आप से बहुत दूर है लेकिन यदि आप कुछ शर्तों को पूरा करते है तो यह पुस्तक आपके निकट आ सकती है |

बाद में शब्द "ज़ालिकल" -- यह भी क़ुरान के मूल्य इंगित करता है , और कई भविष्यवाणी शामिल है |यह क़ुरान की पूर्णता को भी संदर्भित करता है | वास्तव में , सभी पिछले भविष्यदवकताओं , हज़रत मुहम्मद (स अ व स) के आगमन पूर्वाभास और उन्होंने कहा की एक महान पुस्तक लाएगा |

अल - किताब (शाब्दिक हवाई पुस्तक) यहाँ का अर्थ है एक वादा kiya जिस किताब को सदियों से सभी देशों द्वारा इंतज़ार कर रहे है | और आज यह किताब हमारे सामने है एक और स्पष्टीकरण यह है की यह पुस्तक है जो अभी तक तुम से दूर है, आप के करीब हो सकता है | और इसमे कोई संदेह नहीं है | यानी, इस बात में कोई शक नहीं है की यह किताब आपके करीब आ सकती है | अब , जब हम "ज़ालीकल" के सात " ला रैब "मिला कर पढ़ते है , तो यह एक परिपूर्ण रूप में इस पुस्तक को परिभाषित करता है ,जिसमे कोई संदेह नहीं है (अपनी सच्चाई में - की यह सिर्फ सच को शामिल करता है) और यह सभी पवित्र लोगों के लिए एक मार्गदर्शन है (जो अल्लाह (सु व त) से डरते है | अगर आप तक़वा के बिना इस किताब को पढ़ते है तो कभी भी आपको बहुत शक होगा | यह वास्तव में एक असाधारण किताब है | यह किताब उन लोगों के लिए जो तक़वा रखते है उनके लिए संदेह से परे है और तक़वा से वंचित लोगों के लिए संदिग्ध पुस्तक है , जो अल्लाह (सु व त) से नहीं डरते , जो पवित्र नहीं है, तो यह किताब कभी उनके लिए संदेह का एक स्त्रोत रहेगा (यानी किताब के भीतर का सच हमेशा सील रहेगा और उनके लिए दुर्गम रहेगा) | दूसरी ओर , जो लोग अल्लाह (सु व त) से डरते है , यह किताब उनके सभी संदेह को अपव्यय करेगा | इस प्रकार , हम देखते है की कैसे एक छोटे से छंद में , अस्वीकार , यहाँ तक की छंद के अंत में ही , देखो कितने विषयों को अल्लाह (सु व त) ने सिखाया है |लेकिन यह जिस पर यकीन है , बिना किसी काम संदेह के की यह सभी मार्गदर्शन है (और सही रास्ता दिखने वाला) जो हम प्राप्त कर चुके है और

लगातार प्राप्त करते रहेगें , यह इस पुस्तक से ही है की हम इसे प्राप्त करेंगें |इसलिए , सबसे पहले , इबाबत के सम्बन्ध में , पढ़ना / या अल्लाह (सु व त) की किताब को पढ़ने का सस्वर पाठ इतना मौलिक है की मुझे इस पर अपनी चेतना जगाए रखने की ज़रूरत है |जहाँ तक मैने विश्लेषण किया है और विभिन्न देशों के रिपोर्टों के अनुसार जो प्राप्त हुआ है , वहां बहुत काम लोग है जो हर दिन क़ुरान पढ़ा करते है और जब मैं बच्चों के बारे में पूछता हूँ , केवल कुछ बच्चे अपने दैनिक आधार पर क़ुरान पढ़ते है | यदि कोई विशेष ध्यान इस मौलिक अभ्यास पर नहीं दिया गया (यानी क़ुरान सस्वर पाठ पढ़ने के लिए नहीं दिया जाएगा) तरबियत जिस विषय पर मैं बात कर रहा हूँ इस पर निर्धारित सभी समस्याएं स्थिर रह जायेंगीं , और इन बातों का एहसास नहीं किया जाएगा |यह क़ुरान के साथ है की उनके सभी समस्याओं का समाधान मिल जाएगा | यह क़ुरान के साथ समर्थन है की हम अपनी भावी पीढ़ियों के लिए देखभाल करने में सक्षम हो जायेंगें |क़ुरान के बिना , हम कुछ भी नहीं कर सकेंगें |और क़ुरान के दो पहलू है : यह पवित्र लोगों के लिए एक मार्गदर्शन है , जो अल्लाह (सु व त) से डरते है |जिन लोगों के पास तक़वा नहीं है , उनके लिए क़ुरान दूर हो जाती है |ऐसा लगता है जैसे यह उनके पास है , लेकिन वास्तव में उन लोगों से दूर है |और जब तक यह पुस्तक निकट नहीं आती , तब तक इस संसार की समस्याओं का समाधान नहीं होगा |

दुनिया भर में जमात उल सहीह अल इस्लाम के सभी सदस्यों को इस पर विशेष ध्यान देना होगा |यदि आप क़ुरान से दूर रहते है ,तो बाकी सभी गतिविधियों का कोई लाभ नहीं होगा (वे किसी लाभ के नहीं होगें)| हमारे लोगों में बहुमत परिपक्क है वे लोग है , जो धर्म के लिए प्यार रखते है , लेकिन उन्हें यह भी सिखाया गया है की जब तक वहाँ क़ुरान के लिए प्यार नहीं है , तो धर्म के लिए प्यार व्यर्थ हो जाएगा | इसलिए , क़ुरान के लिए प्यार को विकसित करके उन्हें सक्षम करना बहुत महत्वपूर्ण है |अगर क़ुरान के लिए प्यार मौजूद नहीं है , तो अन्य सभी प्रयास व्यर्थ होगा ,क्योंकि पहले अल्लाह (सु व त) द्वारा लाया परिचय - उसका परिचय है :- पुस्तक |एक किताब जिसका सभी राष्ट्रों को इंतज़ार है |दुनिया के निर्माण के बाद से हर किसी को इस पुस्तक का इंतज़ार था |लेकिन जब वह किताब आई , तो कितने लोगों ने अपने चेहरों को इससे दूर कर दिया और चले गए |

क़ुरान हज़रत मुहम्मद (स अ व स) के बारे में कहता है की वह (स अ व स) अल्लाह (सु व त) से शिकायत करेंगें : हे अल्लाह , मेरे लोगों ने क़ुरान के लिए ध्यान नहीं दिया और इसे उपक्षित किया |तुम्हें ऐसे लोगों जैसे नहीं बनाना चाहिए ,प्रलय के दिन हज़रत मुहम्मद (स अ व स) तुम्हारे बारे में शिकायत करें और कहें : हे अल्लाह , ये जो उनके चेहरों को दूर कर दिया और क़ुरान को छोड़ कर चले गए |

इसलिए ,आज प्रत्येक देश के जमात उल सही अल इस्लाम के तरबियत को मान्यता देने के लिए , एकमात्र तरीका यह देखना है की क्या हज़रत मुहम्मद (स अ व स) की यह शिकायत आपके लिए लागू होती है या नहीं ?

अब , हम - आप में से कितने को देखने की ज़रूरत है या तो समूह के बीच गिना जाएगा (जिन्होने क़ुरान को बंद रखा , या जिन्होने क़ुरान की उपेक्षा की) फैसले के दिन पता चलेगा ? क्या आप उन लोगों के बीच गिने जाना चाहते है जिनके बारे में हज़रत मुहम्मद (स अ व स) शिकायत करेंगें या क्या आप उन लोगों के बीच गिने जाना चाहते है जिनके बारे में हज़रत मुहम्मद (स अ व स) कहेंगें : हे अल्लाह , ये मेरे लोग है जिन्होने क़ुरान को जाने नहीं दिया |इसका वास्तव में सर्वोपरि महत्व है और वास्तव में

जीवन का इबाबत क़ुरान है |

पूजा से पहले ,क़ुरान ही है |यहीं नहीं , तहज्जुद के समय (सालते फज़र से पहले) अल्लाह (सु व त) का कहना है की पवित्र क़ुरान सुनाने का प्रयास करना चाहिए |इबाबत के दौरान , वहाँ क़ुरान का पाठ होता है और इबाबत के बाद भी वहाँ क़ुरान का सस्वर पाठ होता है |इसलिए क़ुरान सुनाना और लोगों को इसके अर्थ पर प्रतिबिंबित करने की आदत पैदा करना , यह तरबियत का आधार है और यह तरबियत की चाबी है |इसके बिना, तरबियत नहीं किया जा सकता है |और इस पहलू को ज़्यादातर मिशनरियों ,सदरों , अमीरों और नायब अमीरों ने पूरी तरह से उपेक्षा की है |तुम देख सकते हो की महान मस्जिदों , महान कार्यकर्मों जो (विशेष रूप से मसीह -ए- मौऊद(अ स) की जमात) संकलित कर , दूर देशों से बड़ी तादाद में लोग उत्साह और उल्लास के साथ इसमे शामिल होते है और फिर कुछ दिनों के लिए इसमें भाग लेते है |
लेकिन यह यात्रा / कुछ दिनों की यात्रा अदिव्तीय यात्रा है इसके बाद के लिए आवश्यक नहीं है |यात्रा के लिए /इसके बाद के यात्रा के लिए , यह आवश्यक है की आप दैनिक यात्रायें करते रहें , और इन सभी दैनिक यात्रा के लिए प्रावधान क़ुरान है |

हज़रत मुहम्मद (स अ व स)ने इस तरह से एक मूमिन का वर्णन किया है |उन्होने यह नहीं कहा की एक मूमिन ३५५ दिनों तक सोता है और फिर ५ या १० दिनों का यात्रा करने के लिए जाग जाता है |
नहीं !लेकिन उन्होने विश्वासियों का उदहारण दिया है जैसे की वे हर दिन कर रहे है |

मूमिन लोग सुबह में थोड़ी यात्रा करते है , दोपहर में थोड़ा ,और दूसरे मुक्त क्षणों में थोड़ा करते है ताकि वह उसका आंनद उठा सके , टेलीविशन (टी वि धारावाहिकों ,फिल्मों आदि) को देखने की तरह व्यर्थ की चीज़ों में समय खोने के बजाये , ऐसी सब बातें जो एक अच्छी तरबियत नहीं लाता |इसके विपरीत इन फिल्मों / फ़िल्में अपना ईमान (विश्वास) नष्ट कर सकते है और अल्लाह और क़ुरान से दूर खीचेगा और इस प्रकार शैतान को आगे इन बातों से आपको जोड़ने का अवसर मिल जाता है ,और आस्था को अपनी आँखों में अलंकृत करके |इसके बाद , वे आकर्षित और दिलचस्प हो जाते है और उनके पीछे जाना चाहते है |तुम्हे इस तरह क़ुरान के साथ यात्रा करने की ज़रूरत है |वहाँ इस यात्रा में शैतान के लिए कोई जगह नहीं है और यह इस यात्रा के माध्यम से है की आप इसके बाद के अपने रास्ते की सुविधा में सक्षम होगें |
लेकिन यह आवश्यक है की यह यात्रा प्रत्येक दिन , इंशाल्लाह किया जाएगा |

तुम भी पवित्र क़ुरान पढ़ो और अपनी पत्नियों और बच्चों को भी क़ुरान पढ़ने के लिए कहो |आप अपने और अपने परिवार और अपने आस - पास के सभी लोगों के बीच अपने और अपने घर में मन की शांति और शांति के एहसास को महसूस करेंगें |

वहाँ अपने आप के अंदर परिवर्तन को महसूस करेंगें और अल्लाह तुम्हे रोशन करेगा |अपने घर में ही आप बदलाव देखेंगें (बेहतर के लिए) जहाँ हर जगह अल्लाह की रोशनी होगी |क़ुरान के साथ यात्रा और यह आपके जीवन को पूरी तरह से बदल देगी , लेकिन आप को पता होना चाहिए की यात्रा को किस तरह करने की ज़रूरत है , यह भी बहुत महत्वपूर्ण है |इस यात्रा को बहुत एकाग्रता , ईमानदारी और प्यार से बनाया जाना चाहिए और आपको इसे अपने दैनिक जीवन में एक बोझ के रूप में नहीं समझना चाहिए |क़ुरान के साथ यात्रा अपने रोज़मर्रा के जीवन का एक हिस्सा होना चाहिए , इस तरह कि अल्लाह आपके साथ किरपा करे और यह यात्रा सिर्फ अल्लाह के खातिर होना चाहिए , न कि किसी अन्य प्राणी के लिए |

इसलिए इंशाल्लाह सृष्टिकर्ता कि सुख - समृद्धि कि तलाश करें | यह वास्तव में एक विशाल विषय है | अल्लाह (सु व त) अच्छे से जानता है कि मुझे इस विषय पर कितने उपदेश करने कि ज़रूरत है , यानी इस यात्रा के बारे में समझाना |

इंशाल्लाह , हम अगले शुक्रवार इस विषय को जारी रखेंगें | आशा है अल्लाह आप सभी को आशीर्वाद दे और आप क़ुरान के करीब आएंऔर अपने रोज़मर्रा के जीवन में क़ुरान के करीब और होने में सक्षम हों ; जो सही मायने में मुतक्की है इंशाल्लाह ,अमीन |